सो प्रेमी पूरनु, सो साधू-जनु सूरिमो,
जो आणे सीता सुरिति खे, मारे मन रावणु,
कढे डेंहि डुहीअ मों, सामी मथे मखणु,
अचणु अऊं वञणु, डिसे कोन आकास में.

सामी साहब एक रूपक द्वारा ईश्वर प्रेमी पुरुष और सच्चे साधु-संत के लक्षण बतलाते हुए कहते हैं, ''वही पूर्ण प्रेमी (भक्त) है और वही शूरवीर साधु-संत है, जिसने 'सुरति' (सुधि, स्मृति, स्मरण) रूपी सीता को प्राप्त करने के लिए मन रूपी रावण को मार डाला है। फिर उस वीर ने अपने शरीर रूपी दही का मंथन कर, उसमें से अंतरात्मा/परमात्मा रूपी नवनीत (माखन) निकाला है। उसके पश्चात् वह परब्रह्म/परमेश्वर का रूप देखने और अलौकिक आनंद प्राप्त करने में इतना तल्लीन/मग्न हो गया है कि किसी के आने जाने की ओर भी वह ध्यान नहीं दे पाता और न ही उसका ध्यान आकाश की ओर जाता है।

वेदांत में जीव को ब्रह्म ही कहा गया है 'जीवो ब्रह्मैव नापर।' इसलिए ब्रह्मदेव से लेकर सूक्ष्म जीव-जंतुओं तक सबको 'जीव' कहा जाता है। किसी 'उपाधि' के कारण जीव को कोई श्रेष्ठ या निम्न रूप प्राप्त होता है। अविद्या की उपाधि के कारण जीव वासना/इच्छा वाले कर्मों में बंध जाता है और सुख-दुख, मान-अपमान, जन्म-मरण के चक्कर में पड़ जाता है। जीव अपने मूल/सत्य स्वरूप को भुलाकर अपने स्थूल शरीर को सब कुछ समझने लगता है कर्मरूपी फल खाने वाला जीव अपने आत्मस्वरूप (अहं ब्रह्मास्मि)। को भुलाकर माया-जाल में फँस जाता है। जब वह 'मैं कर्ता', 'मैं भोक्ता' के भाव से स्वयं को अलग कर देता है, तभी उन बंधनों से मुक्त हो जाता है। इसके पश्चात् वह साधना/भक्ति कर, साधु संतों के संग में रहकर सतगुरु के ज्ञान द्वारा अपने मूल स्वरूप को पहचान लेता है तथा परमात्मा के साक्षात् दर्शन कर लेता है।

सामी साहब भी यह बात एक रूपक अलंकार द्वारा समझाते हैं। यहाँ पूर्ण प्रेमी (भक्त) है। सच्चा शूरवीर संत है। दोनों ही परमात्मा को पाना चाहते हैं। दोनों को ही परब्रह्म का साक्षात्कार कर अलौकिक आनंद का उपभोग करना है। यह आनंद विरले किसी को प्राप्त होता है। यहाँ रूपक है सीता रूपी सुरति का, स्मृति का, कि मैं ब्रह्म हूँ। जीव को इस सत्य का विस्मरण हो गया है। सीतारूपी यह स्मृति (याद) मनरूपी रावण ले गया है। जैसे श्रीरामजी ने सीता को रावण के बंधन से छुड़ाया था- रावण को मार कर । वैसे ही मनरूपी रावण को मारकर स्मृति रूपी सीता को मुक्त कर शरीर रूपी दही का मंथन कर अंतरात्मा रूपी माखन निकालना पड़ेगा। तभी साक्षात्कार हो सकेगा।

■